Sahitya Manthan
A Peer-Reviewed, Open Access e-journal
ISSN: 2582 6867, Website: http://www.sahityamanthan.in
Year-2, Issue-4, Continuous Issue-10, November - December 2021

श्री रामचरितमानस की प्रासंगिकता

प्रस्तावना :

विश्व की प्रत्येक संस्कृति और भाषा में कुछ ऐसी साहित्यिक कृतियां अवश्य होती हैं जो अपने दर्शन, विचार, विषय वस्तु, काव्य शैली आदि विशेषताओं के चलते जनता का कंठहार बन जाती है। उस रचना में व्यापत मूल्य सहृदय पाठक के जीवन का आधार मन जातें हैं। गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित श्री रामचरितमानस ऐसी ही एक कालजयी रचना है जो सदियों से भारतवासियों के जीवन का मूल आधार है। एक सम्पूर्ण व्यावहारिक जीवन दर्शन को समेटे हुए ग्रन्थ के रूप में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित श्री रामचरितमानस पर जितनी भी चर्चा, आलोचना-समालोचना और समीक्षा हुई है उतनी शायद ही किसी अन्य लिपिबद्ध ग्रन्थ की हुई होगी, और हो भी क्यों न? ऐसा और कौन सा ग्रन्थ है, जिसने हम संसारी जीवों के व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और राजनैतिक जीवन के विभिन्न अंगों को इतने मर्मस्पर्शी एवं स्पष्ट ढंग से छुआ हो – चाहे वह परिवार के सदस्यों के परस्पर संबंधों की गरिमा-मर्यादा हो, समाज के विभिन्न वर्गों के आपसी संबंधों की मर्यादा हो अथवा राजकीय काम-काज व राजा के कर्तव्यों की। प्रस्तुत आलेख में हम गोस्वामी तुलसीदास कृत "श्री रामचरितमानस की प्रासंगिकता" पर विमर्श करेंगे।

मुख्य शब्द: रामकथा ,गोस्वामी तुलसीदास, श्री रामचरितमानस , रामभक्ति शाखा, कवितावली, जानकीमंगल, विनयपत्रिका, गीतावली, हनुमान चालीसा, बरवै रामायण, भारत,

गोस्वामी तुलसीदास का परिचय –

रामभक्ति शाखा के कवियों में गोस्वामी तुलसीदास सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। इनका प्रमुख ग्रन्थ “श्रीरामचरितमानस” भारत में ही नहीं वरन् सम्पर्ण विशव में विख्यात है। यह भारतीय धर्म और संस्कृति को प्रतिबिम्बित करनेवाला एक ऐसा निर्मल दर्पण है, जो सम्पूर्ण विश्व में एक अनुपम एवं अतुलनीय ग्रंथ के रूप में स्वीकार किया जाता है। गोस्वामी तुलसी दास जी के जन्म के बारे अभी मतभेद है। तुलसीदास जी का जन्म संवत 1589 को हुआ था। माना जाता है कि तुलसीदास जी का जन्म उत्तर प्रदेश के बॉदा जिले के राजापुर नाम के एक छोटे से गांव में हुआ था। तुलसीदास जी की माता का नाम हुलसी तथा पिता का नाम आत्माराम दूबे था। तुलसीदास जी ने गुरु बाबा नरहरिदास से भी दीक्षा प्राप्त की थी। इनके जीवन का ज्यादातर समय चित्रकूट, काशी और अयोध्या में व्यतीत हुआ था। तुलसीदास जी ने अपने जीवन पर कई स्थानों का भ्रमण किया था और लोगों को प्रभु श्री राम की महिमा के

बारे में बताया था। तुलसीदास जी ने अनेकों ग्रंथ और कृतियों की रचना की थी जिनमें से रामचरित मानस, कवितावली, जानकीमंगल, विनयपत्रिका, गीतावली, हनुमान चालीसा, बरवै रामायण इनकी प्रमुख रचनाएं मानी जाती है। तुलसीदास जी ने अपने जीवन में समाज में फैली हुई कुरितियों के खिलाफ भी आवाज उठाई थी। उन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा इन कुरीतियों को दूर करने का प्रयास भी किया था।

श्रीराम का विराट व्यक्तित्व-

भारत विविधताओं से भरा एक विशाल देश है जहां विभिन्न प्रांतों एवं राज्यों की अपनी अपनी भाषाएँ तथा सभ्यता-संस्कृति हैं। अलग-अलग प्रांतों की संस्कृतियों की प्रतिछवि रामकथा में देखने को मिलती है। राम-सीता कहीं जनजातीय परिधान में दिखलायी पड़ते हैं, तो कहीं क्षेत्र विशेष की पारम्परिक वस्त्र धारण किए हुए तथा उन क्षेत्रों से सम्बंधित पारंपरिक मान्यताओं का पालन करते हुए देखे जाते हैं।उनके रंग-रूप, वेश-भूषा, खान-पान, रहन-सहन, जीवन-शैली आदि में भिन्नता देखने को मिलती है। भले ही अलग-अलग प्रदेशों की सांस्कृतिक प्रभाव के कारण रामकथा में भिन्नता के दर्शन होते हैं किंतु भाव की दृष्टि से सभी में एक समता ही परिलक्षित होती है। राम हर रामकथा में राजा दशरथ के ही पुत्र हैं, राम सीता के स्वामी तथा लक्ष्मण के बड़े भाई हैं, धर्म के रक्षक तथा प्रजा के हितैषी एवं मर्यादापुरूषोत्तम ही रहे हैं।

ऐसे में यह विचारणीय है कि गोस्वामी तुलसीदास ने जब "श्रीरामचरितमानस" की रचना की थी तो क्या उनका ध्येय केवल श्रीराम की भक्ति था या रामकथा के माध्यम से वे अपने समाज का मार्गदर्शन भी कर रहे थे? कहते हैं "साहित्य समाज का दर्पण होता है" , इसका यह अर्थ भी है कि किसी रचना के वास्तविक मर्म या उद्देश्य को समझना हो तो उस रचना के देशकाल, परिस्थितियों को पहले जानना - समझना आवश्यक होता है, अन्यथा आप जाने - अंजाने उस रचना और रचनाकार के साथ अन्याय कर जाते हैं। इस दृष्टि से देखा जाये तो गोस्वामी तुलसीदास कृत "श्रीरामचरितमानस" का रचनाकाल समाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर बडे बदलावों का काल है। राजसत्ता पर दिन-ब-दिन मुगल आक्रमणकारियों का वर्चस्व बढता जा रहा था, जिसके चलते समाज जाति आधारित, अर्थ आधारित अनेक पंथो और वर्गो में विभाजित हो गया था। बदलाव सदैव सकारात्मक नहीं होता, विशेषकर जब वह जबरन थोपा गया हो! अत: भारतीय समाज में एकाएक आरोपित इन राजनीतिक - सामाजिक बदलावों ने जनमानस की मान्यताओं, परम्पराओं और विश्वासों की जडे हिलाकर रख दी।विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा अपने "आराध्य" के पूजास्थल और मूर्तियां खंडित होते देख लोगों का धर्म से विश्वास डिगा , तो कुछ अवसरवादी भारतीयों ने अपनी स्वार्थपरता के चलते नैतिक मूल्यों से समझौता कर आगे बढने में भी गुरेज नहीं किया। जिसके चलते समाज और परिवार भी बिखरने लगे।ऐसे में जरुरत थी

परिवार और समाज के प्रति लोगों को पुन: जागरुक करने की, आवश्यकता थी नैतिक मूल्य और कर्तव्यों को याद दिलाने की, ईश्वरीय सत्ता में पुन: आस्था जगाने की! सम्भवत: इसीलिये गोस्वामी तुलसीदास जैसे समाजदृष्टा ने श्रीराम के जीवन को बेहद सरल, सहज और स्पष्ट तरीके से "श्रीरामचरितमानस" के रूप में सामने रखा। जिसकों पढकर यह स्पष्ट हो जाता है कि रामकथा महज किसी पंथ विशेष , समाज विशेष की धार्मिक आस्था का विषय नहीं है, बल्कि रामकथा तो मनुष्य मात्र के लिये एक मापदंड है , चाहे आप गृहस्थ हो और आपकी दिनचर्या आपके परिवार के इर्द - गिर्द ही बुनी हो, या आप समाज सुधारक अथवा राजनेता हो, और आपका जीवन समाज और देश के लिये समर्पित हो! वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाये तो आज भारतीय समाज पारिवारिक स्तर से लेकर राष्ट्रीय राजनीति तक व्यापक और महत्वपूर्ण बदलावों से गुजर रहा है ऐसे में रामकथा की प्रासंगिता और भी बढ़ जाती है। समाज में संतुलन एवं स्थिरता लाने तथा मानवीय मूल्यों की पुन:स्थापना के लिए आज दरकार है पीछे देखने की अर्थात उन परंपराओं, मान्यताओं, मूल्यों, आदर्शों एवं मर्यादाओं के अनुसरण की, उनसे शिक्षा लेने की, जिनकी स्थापना हमारे पूर्वजों ने समाजिक संतुलन, न्याय, समता की स्थापना के लिए कर गए हैं। यदि चलते समय मार्ग में छोटा सा गड्ढा सामने आ जाए तो वापस लौटने की बजाए उस गड्ढे की सीमा का अनुमान कर कुछ कदम पीछे चलने के बाद दौड़ लगाकर पूरी शक्ति के साथ छलांग मारते हुए गड्ढे को पार कर जाते है, ठीक उसी प्रकार यदि जीवन में कोई समस्या आए, तो हमें अपनी प्राचीन परंपराओं की ओर रूख करना चाहिए क्योंकि उनमें जीवन की अनेक समस्याओं के समाधान का मंत्र छुपा होता है, जिनसे हमारे टूटे एवं निराश मन को शक्ति मिलती है क्योंकि वे संजीवनी का काम करती है। रामकथा भी उस संजीवनी का भंडार है जिसमें मूल्यों, आदर्शों, मर्यादाओं तथा नैतिकता के एक से एक उदाहरण मौजूद हैं।

मानस में निहित मूल्य-

पारिवारिक मूल्य :- " परिवार ही हमारे सामाजिक जीवन की आधारशिला है। ' जिसमें हमारे जन्म से लेकर मृत्यु तक सारी गतिविधियाँ संचालित होती है। हिन्दू परिवार का जीवन-दर्शन पुरूषार्थ पर आधारित है जो विश्व के अन्य समाजों के परिवारों का जीवन दर्शन नहीं है । अतः परिवार मनुष्य के सभ्य और सुसस्ंकृत होने का स्वाभाविक तारतम्य है जिसके माध्यम से मानव जीवन का उन्नयन होता हैं। "

तुलसीदास ने रामचरितमानस में परिवार के आदर्श और मर्यादा को स्थापित करने का सुन्दर प्रयास किया है यह प्रयास इतना प्रभावी है कि आचार्य शुक्ल लिखते हैं कि-" यदि भारतीय शिष्टता और सभ्यता का चित्र देखना हो तो इस राम समाज में देखिए। कैसी परिष्कृत भाषा में कैसी प्रवचन पटुता के साथ प्रस्ताव उपस्थित होते है किस गंभीरता और शिष्टता के साथ बात का उत्तर दिया जाता है छोटे-बड़े की मर्यादा का किस सरलता के साथ

पालन होता है।" मानस ' में राम कैकेयी संवाद में कैकेयी की कठोर आज्ञा पर श्री राम मीठी वाणी एवं शिष्टता से कहते है।–

"सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी।जो पितु मातु वचन अनुरागी।
तनय मातु पितु तोष निहारा।दुर्लभ जननि सकल संसारा। "

सामाजिक मूल्य - गोस्वामी तुलसीदास का रचनाकाल भारतीय सामाजिक व्यवस्था के पतन का काल था। हिंदू समाज सवर्ण - अवर्ण के जाल में विभाजित हो गया था। समाज में छुआछूत पूर्ण व्यव्हार बढ़ता जा रहा था। जैन,बौद्ध धर्म से बात इस्लाम के रूप में नया पंथ भारतीय समाज में प्रवेश कर गया था। लोग भय वश,लोभ वश अपना धर्म त्याग इस्लाम को अपना रहे थे। समाज में स्त्रियों की स्थिति कमजोर होती जा रही थी, उन पर कई प्रकार के प्रतिबंध भी हम इसी काल में लगते देखते हैं। मानस में हम ऐसे कई प्रसंग देखते हैं जिनके माध्यम से तुलसीदास ने सामाजिक कुरीतियों और कुप्रथाओं पर तो चोट की ही है साथ ही समाजिक समन्वय स्थापित करने का प्रयास भी किया है। हम कह सकते हैं कि रामचरितमानस लोक-मर्यादा और रीति-नीतियों का प्रतिपादक एक श्रेष्ठ काव्य-ग्रन्थ है। तुलसी का समाज रीति-नीति का पालन करने वाला समाज है। इनका पालन न करने वाला व्यक्ति दण्डित होता है। बालि इसी कारण दण्डित हुआ, रावण का इतना बड़ा ऐश्वर्य भी रीति-नीति के अनुसार आचरण न करने के कारण ही नष्ट हुआ।

धीरज धर्म मित्र अरु नारी,आपद काल परखिहेहू चारी ॥

राजनीतिक मूल्य - अमेरिका के राष्टपति फ्रैंकलिन डी0 रूजवेल्ट ने सन् 1941 में आधुनिक मानव समाज के लिए चार प्रकार की स्वतन्त्रताओं का प्रतिपादन किया था-भाषा व अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता, अपने ढ़ंग से ईश्वर को पूजने की स्वतन्त्रता, भयमुक्त होने की स्वतन्त्रता एवं अभाव मुक्ति की स्वतन्त्रता। तुलसीदास रामचरितमानस में इन सभी प्रकार की स्वतन्त्रताओं को राजतन्त्रीय शासन व्यवस्था में भी सम्यक प्रकार से विन्यस्त दिखलाते हैं। किसी व्यक्ति की वैचारिक स्वतन्त्रता एक महान लोकतान्त्रिक मूल्य तथा मानव जाति की प्रगति की आधारशिला है, जिस पर राजसत्ता मदान्ध होकर अंकुश लगाने का यत्न कर सकती है किन्तु 'चित्रकूट सभा' की प्रसंगोद्भावना के माध्यम से व्यक्ति के इस विचार स्वातन्त्र्य का पूर्ण निर्वाह किया है। इस प्रसंग का वैशिष्ट्य निरूपित करते हुए आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं- "धर्म के इतने स्वरूपों की एक साथ योजना, हदय की इतनी उदात्त वृत्तियों की एक साथ उद्भावना तुलसी के विशाल मानस में ही संभव थी। यह संभावना उस समाज के भीतर बहुत से भिन्न-भिन्न वर्गों के समावेश द्वारा संघटित की गई है। राजा और प्रजा, गुरू और शिष्य, भाई-भाई, माता और पुत्र, पिता और पुत्री, श्वसुर और जमाता, सास और बहू, क्षत्रिय और ब्राहमण, ब्राहमण और शूद्र, सभ्य और असभ्य के परस्पर व्यवहारों के

धर्म गांभीर्य और भावोत्कर्ष के कारण अत्यन्त मनोहर रूप प्रस्फुटित हुआ है।" इस आदर्श राज्य रामराज्य में दैहिक, दैविक एवं भौतिक तापों के आतंक से प्रजा सर्वथा भयमुक्त है व सभी मनुष्य इच्छानुसार स्वधर्म का पालन करते हैं-

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा।।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।।

तुलसी ने 'रामचरितमानस' में अयोध्या के राज्य शासन का चित्रण कर आदर्श राजनीति का भी निरूपण किया। उनकी स्थापनाएँ हैं- राजा ईश्वर का अंश है। उसे ईश्वर के समान ही समदर्शी और प्रजा पालक होना चाहिए। जिस राजा के राज्य में प्रजा दुःखी होती है, वह नरक का अधिकारी होता है। वही राज्य-शासन अच्छा कहा जायेगा जिसका राजा प्रजा की राय लेकर कोई कार्य करता होगा। राजा दशरथ एक आदर्श नृपति के रूप में चित्रित हैं। वे कुशल नीतिज्ञ, वीर, योद्धा, दयालु एवं प्रजापालक हैं। उनके पुत्र राम भी उन्हीं के गुणों से भूषित हैं। उनका शासन-काल 'रामराज्य' तो प्रजा की सुख-समृद्धि का वाचक ही बन गया है। इस प्रकार रामचरितमानस उदात्त राजनीतिक चेतना से भी मण्डित है ।

समाहार **-**

गोस्वामी तुलसीदास कृत "श्री रामचरितमानस" का सदैव भारतीय समाज में विशिष्ट स्थान रहा है। लोकनायक गोस्वामी तुलसीदास सिर्फ़ कवि ही नहीं बल्कि सामाजिक चेतना के अग्रदूत थे। अपनी कालजयी रचना श्री रामचरितमानस से उन्होंने समाज को जोड़ने का कार्य किया है आज के विषम परिवेश में तुलसी कृत श्री रामचरितमानस के अनुशीलन से अनेकता में एकता के तत्वों को पहचाना जा सकता है और विखंडित समाज को अखंड भारत के आदर्श से जोड़ा जा सकता है। श्री राम और माता सीता का जीवन एक संदेश है, एक प्रेरणा है। उनके जीवन का प्रत्येक प्रसंग एक पथप्रदर्शक की तरह काम करता है। जरुरत है उन प्रसंगों के वास्तिवक मर्म को समझने की। किंतु हमनें क्या किया? एक वर्ग ने राम को आदर्श मान पूज्यनीय बना दिया, उनकी भक्ति करने लगे, किंतु अपने जीवन में राम के जीवन मूल्यों को नहीं शामिल किया। अत: राम को पूज्यनीय तो बनाया किंतु अनुकरणीय नहीं। क्योंकि वह राह कठिन है! दूसरा वर्ग उन लोगों का है जिन्होंने राम के जीवन और कार्यों को चिंतन का विषय बना डाला और राम और सीता को ही परस्पर विरोधी के रूप में खड़ा कर दिया। जिसके चलते रामकथा कहने का वास्तिवक उद्देश्य कहीं पीछे रह गया।राम और सीता के जीवन को चिंतन या पूजन का विषय बनायें जाने से ज्यादा आवश्यक है व्यवहार में उतारने की , ताकि आने वाली पीढ़ियाँ केवल रामकथा को ही न जाने बल्कि रामकथा के वास्तिवक भाव को भी समझे। श्री रामचरितमानस महज एक आदर्श नहीं हैं, एक काव्य नहीं है , बल्कि रामकथा भारतीय संस्कृति का यथार्थ भी हैं, भारतीय संस्कृति का शाश्वत सत्य है।

संदर्भ सूची **-**

1. श्रीरामचरितमानस - अयोध्या कांड, अरण्य कांड तथा उत्तर कांड - गोस्वामी तुलसीदास - गीताप्रेस गोरखपुर
2. आधुनिक संदर्भ में रामचरितमानस की प्रासंगिकता - अध्याय -3 और 4 - डॉ.लक्ष्मी सिंह- बिहार ग्रंथ अकादमी पटना
3. तुलसी आधुनिक वातायन से - रमेश कुंतल मेघ -पृष्ठ संख्या- 10 -13- भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन दिल्ली
4. तुलसी की साहित्य साधना - लल्लन राय - पृष्ठ संख्या0 159 - वाणी प्रकाशन दिल्ली
5. वर्तमान सन्दर्भ में श्री रामचरितमानस की प्रासंगिकता - निवेदिता तिवारी - https://rashtram.org/
6. आज भी प्रासंगिक है रामचरितमानस - उमेश पाठक - http://www.bhartiyadharohar.com/

संपर्क:
आवास –C 50,
डॉ.हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय आवासीय परिसर ,
सागर , मध्यप्रदेश
ईमेल - sujata0630@gmail.com
Mob.No. - 9425821780

स्व घोषणा प्रमाण पत्र

मैं प्रमाणित करती हूं कि **"**श्री रामचरित मानस की प्रासंगिकता**"** मेरा मौलिक, अप्रकाशित शोध आलेख है। इस शोध आलेख में कहीं से नकल नहीं की गयी है, जिन - जिन पुस्तकों, लेखों या वेब लिंक्स का प्रयोग इस आलेख को तैयार करने में किया गया है उन सभी का उल्लेख लेख के अंत में दी गयी संदर्भ सूची में सलंग्न है।

डॉ.सुजाता मिश्र
अतिथि शिक्षक , हिंदी
डॉ.हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
सागर, मध्यप्रदेश